

विशद दीपावली पूजन विधि



रचयिता
प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

- कृति - विशद दीपावली पूजन विधि
- कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
- संस्करण - चतुर्थ-2015 • प्रतियाँ :1000
- संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
- सहयोग - क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी, क्षु. भक्तिभारती, क्षु. वात्सल्य भारती
- संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी
- संयोजन - आरती दीदी • मो. 9829127533- 9660996425
- प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, नेहरू बाजार
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008
2. श्री राजेशकुमार जैन (ठेकेदार)
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 09414016566
3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा • मो.: 09416882301)
4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली
5. जय अरिहन्त ट्रेडर्स (हरीश जैन)
6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली, मो. 9818115971

—: अर्थ सौजन्य : —

श्रीमती ललिता देवी जैन स्व. ताराचन्द जी जैन
श्री दिनेश कुमार जैन-कविता जैन (बाकलीवाल)
24, कृष्णा कॉलोनी, नया खेड़ा, अम्बाबाड़ी, जयपुर मो. 9314508513

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट , जयपुर • फोन : 2313339, मो.: 9829050791

दीपावली कब, क्यों और कैसे मनाएँ

प्रति वर्ष कार्तिक कृष्ण अमावस को भारतीय सभ्यता में दीपावली के रूप में मनाया जाता है। दीपावली मनाने का प्रचलन कब से प्रारम्भ हुआ इसके बारे में विभिन्न साम्प्रदायों की अलग-अलग मान्यताएँ प्रचलित हैं। जैनधर्म का मानना है कि उस दिन प्रातःकाल भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ था और सायंकाल उनके प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इस उपलक्ष्य में दीपावली का पर्व दीपमालिका के रूप में मनाया जाता है।

एक मत के आधार पर यह माना जाता है कि रावण का वध करके राम का अयोध्या आगमन एवं राज्याभिषेक हुआ था, एक मान्यता है कि कृष्ण का द्वारिका गमन हुआ था, एक मान्यता यह भी है कि पाण्डवों का तेरह वर्ष वनवास पूर्ण करके इन्द्रप्रस्थ में आगमन हुआ था, इस दिन विक्रमादित्य का राज्याभिषेक हुआ था या सम्राट अशोक ने कलिंग पर विजय प्राप्त की थी, गुप्तकाल का उदय इस दिन मानते हैं। पौराणिक कथा है कि महाराजा पृथु ने पृथ्वी का दोहन किया था, गौतम को पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई थी, किसी की मान्यता यह भी है कि परम योगी रामकृष्ण परमहंस एवं आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने आज के दिन नश्वर देह का त्याग किया था। सिक्ख समाज की मान्यता है कि उनके छठवें गुरु गोविन्द सिंह की कारावास से मुक्ति हुई थी इत्यादि मान्यताओं के बीच पौराणिक कथाएँ भी प्रचलित हैं जैसे-कथा है कि नरकासुर ने कृष्ण से वरदान माँगा था कि उसके मृत्यु के दिन को उत्सव के रूप में मनाया जाए, अनेक दीप जलाए जाएँ इसलिए दीपावली मनाई जाती है। एक कथा है कि राजा हेम का पुत्र बहुत सुन्दर था; किन्तु ज्योतिषी ने घोषणा की कि पुत्र शादी के चौथे दिन ही मर जाएगा होनी को कौन टाल सकता है। यह सोच राजा चुप रहा। युवा होते ही राजकन्या से विवाह हो गया। राजकन्या को यह पता चला गया एक बार उसने देखा भयंकर नाग फुँकार मारता हुआ महल की ओर बढ़ता आ रहा है तब उसने सुन्दर इत्र पुष्प माल रास्ते में बिछा दिए तथा कर्णप्रिय संगीत की मधुर ध्वनि छेड़ दी और नागराज को मुग्ध कर लिया। कहा भी है-

पूजी लाओ प्रेम की, गाओ मीठी राग।
वश होने पर नाग के, भले नचाओ नाग॥

नाग को राजकन्या ने वश में कर लिया तब नागराज ने वरदान माँगने को कहा। कन्या ने वचनवद्ध करके अपना सौभाग्य माँगा तब नागराज ने अभयदान दिया तब राजा ने सारे राज्य में दीपमालिका से हर्ष मनाया तब से दीपमालिका रूप में दीपावली मनाई जाती इत्यादि। इस दिन आचार्य भरतसागरजी की समाधि होने से समाधि दिवस मनाया जाता है।

कुछ भी हो जिनवाणी को प्रमाण मानते हुए सभी दीपावली भगवान महावीर के निर्वाण और गौतम के केवलज्ञान के उपलक्ष्य में मनाते हैं।

दीपावली मनाने के भी विभिन्न तौर तरीके हैं। कहीं-कहीं लोग लक्ष्मी पूजन करते हैं, कहीं लक्ष्मी, सरस्वती एवं गणेश की पूजन करते हैं, कहीं लोग अपने (क्षत्रिय) अस्त्र-शस्त्र की पूजन करते हैं, वैश्य लोग अपने तराजू, मीटर इत्यादि पूजते हैं, दीपमालिका के साथ लोगों में जुआँ खेलने का प्रचलन है। कहीं पर लोग पटाखे, फुलझड़ी जलाकर धूम धड़ाका करते हैं, कहीं-कहीं पर लोग जानवरों को लड़ाते उनके सींग, पूँछ आदि रंगते हैं, कहीं लोग तिजोरी की पूजा करते हैं तो कहीं सोना-चाँदी एकत्र करके उस पर भोग लगाते हैं किन्तु यह उचित नहीं होता जब भगवान महावीर का निर्वाण हुआ तो निर्वाण लाडू चढ़ाकर पूजा करना और रात्रि में 16, 21 अथवा 25 दीपक जलाकर भगवान महावीर एवं गौतम गणधर की पूजन करके दीपावली मनाना ही श्रेष्ठ है जैसाकि आगम में उल्लेख आया है कि गौतम स्वामी को सायं गोधूलि वेला में केवलज्ञान हुआ था तो उसी समय दीपावली मनाना उचित है। जिसकी विधि आगे पुस्तक में दी जा रही है।

- आचार्य विशदसागर

खिलाकर खाने का मजा ही कुछ और है।
पिलाकर पीने का मजा ही कुछ और है॥
महावीर का नारा जियो और जीने दो।
जिलाकर जीने का मजा ही कुछ और है॥

भक्ति से मुक्ति

भगवान महावीर सब ओर से भव्यों को सम्बोधन कर पावा नगरी पहुँचे और वहाँ मनोहर उद्यान नाम के वन में विराजमान हो गये।

जब चतुर्थकाल में तीन वर्ष साढ़े आठ माह बाकी थे तब स्वाति नक्षत्र में कार्तिक अमावस्या के दिन प्रातःकाल (उषाकाल) के समय अघातिया कर्मों को नाश कर भगवान कर्म बन्धन से मुक्त होकर मोक्षधाम को प्राप्त हो गये। इन्द्रादि देवों ने आकर उनके शरीर की पूजा की। उस समय देवों ने बहुत भारी देदीप्यमान दीपकों की पंक्ति से पावा नगरी को सब तरफ से प्रकाशयुक्त कर दिया। उस समय से लेकर आज तक लोग प्रतिवर्ष दीपमालिका द्वारा भगवान महावीर की पूजा करने लगे। उसी दिन सायंकाल में श्री गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्रगट हो गया। तब देवों ने आकर गंधकुटी की रचना करके गौतम स्वामी की एवं केवलज्ञान की पूजा की। इसी उपलक्ष में सायंकाल में दीपकों को जलाकर पुनः नयी बही आदि का मुहूर्त करते हुए गणेश और लक्ष्मी की पूजा करने लगे। अपने जैन धर्म में गौतम गणधर ही गणेश है। ये विघ्नों के नाशक हैं और उनके केवलज्ञान विभूति की पूजा ही महालक्ष्मी की पूजा है। कार्तिक वदी चौदश की पिछली रात्रि में अर्थात् अमावस्या में प्रभात में पौ फटने के पहले ही आज भी पावापुरी में निर्वाण लाडू चढ़ाया जाता है। श्री महावीर जी में अपार जन समूह चान्दनपुर के महावीर के समक्ष भक्ति भाव से निर्वाण लाडू समर्पित करता है। कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन प्रातः जिन मंदिर में पहुँचकर श्रीजी के अभिषेक के पश्चात् मूलनायक महासमुच्चय पूजा करके महावीर पूजा करनी चाहिए। पूजा में गर्भ-जन्म-तप ज्ञान कल्याणकों के अर्घ चढ़ाकर इसी पुस्तक में आगे मुद्रित निर्वाण काण्ड भाषा पढ़कर पुनः निर्वाण कल्याणक का अर्घ पढ़कर निर्वाण लाडू चढ़ाकर जयमाला पढ़नी चाहिए। अनन्तर शांति पाठ, विसर्जन करके पूजा पूर्ण करनी चाहिए। सायंकाल में दीपकों को प्रज्ज्वलित करते समय निम्न मंत्र बोलना चाहिए।


ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं मोहान्धकार विनाशनाय ज्ञान ज्योति प्रद्योतनाय दीप पंक्ति प्रज्वालयामीति स्वाहा। पुनः प्रज्ज्वलित दीपकों को लेकर नए शुद्ध वस्त्र पहनकर सबसे पहले मंदिरजी में रखना चाहिए। अनन्तर घर में दुकान आदि में सर्वत्र दीपकों को सजाकर दीपमालिका उत्सव मनाना चाहिए। प.पू. आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित प्रस्तुत पुस्तक से गणधर वलय चालीसा, पावापुर चालीसा, आरती, स्तोत्र आदि पढ़कर अथाह पुण्य का अर्जन करना चाहिए।

मुनि विशालसागर

वर्षायोग-2015, मानसरोवर-जयपुर

दीपावली विधि

प्रतिष्ठान में नवीन बहियों की पूजा

1. सर्वप्रथम 2-3 चौकी दीवार से सटाकर बिछानी चाहिए उस पर पलासणा या स्वच्छ वस्त्र बिछाना चाहिये।
2. फिर 2-3 भगवान की तस्वीरें, जिनवाणी शास्त्र, एक थाली में दीपक, अगरबत्ती, माचिस तथा रूई व घी का एक छोटा सा डिब्बा व एक छोटी चम्मच रखनी चाहिये ताकि दीपक में घी खत्म हो जाये तो पुनः डाला जा सके तथा अगरबत्ती स्टेण्ड रखना चाहिये।
3. दो पाटों पर पूजा की थाली व सामग्री चढ़ाने की थाली रखें जल, चंदन का कलश व स्थापना का ठौणा व एक छोटी प्लेट जल चन्दन चढ़ाने के लिए रखना चाहिए। पूजा करने वालों की संख्या ज्यादा हो तो पूजा के दो थाली सेट तैयार कर लेना चाहिये।
4.  भगवान की तस्वीरों का मुख उत्तर पूर्व तथा घर के मुखिया का मुँह भी उत्तर पूर्व होना श्रेयस्कर है।

5.  उसी दीवार पर सुविधानुसार निम्न प्रकार मांडना मंडवाना चाहिये :

ॐ ॐ 1008 श्री महावीरयन्मः ॐ
श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री
नवर्वक्षलमालका रहे
हविकशुभसाम्ना